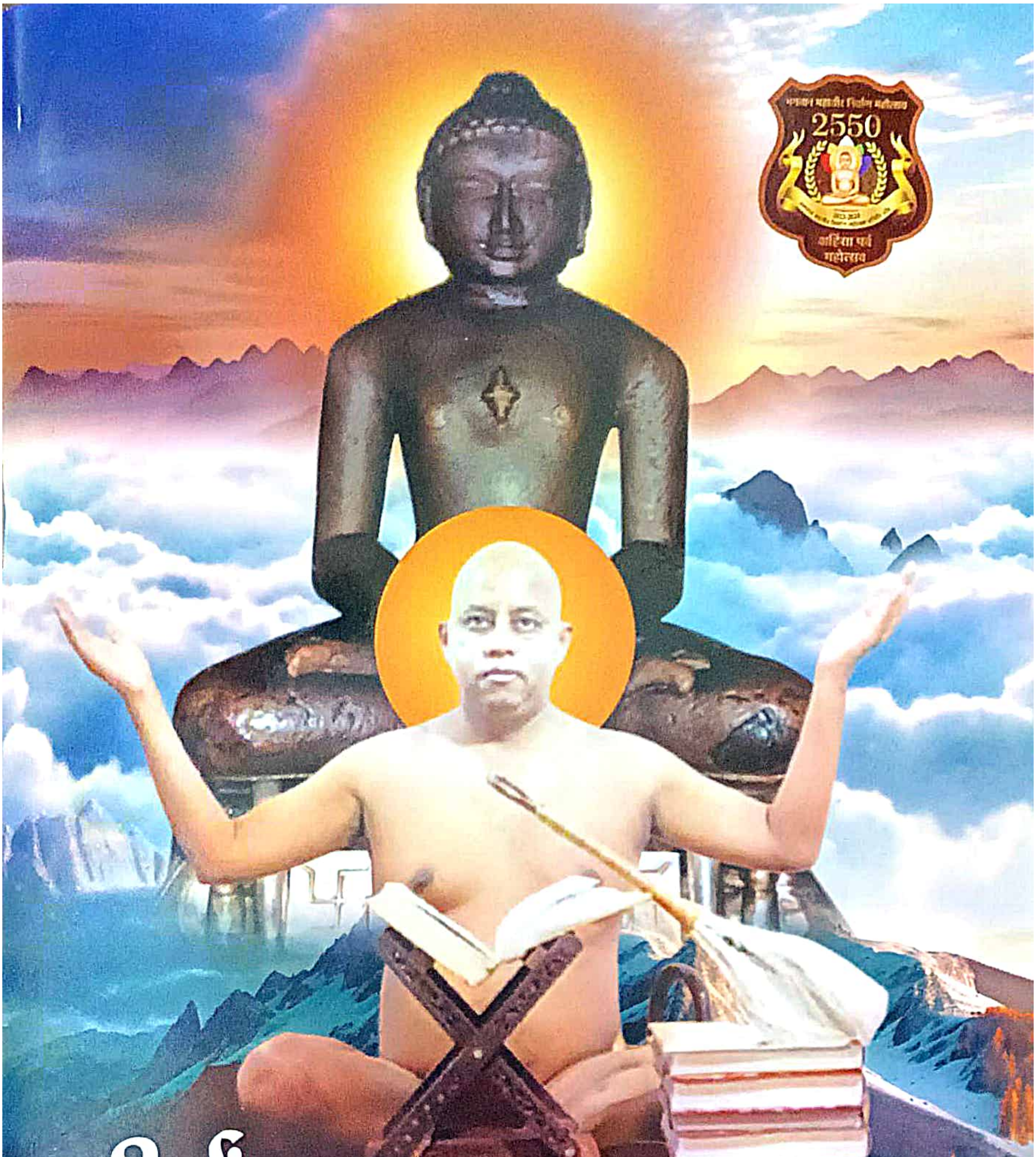

तीर्थंकर महावीर कथा

आचार्य प्रज्ञसागर मुनि

तीर्थंकर महावीर की जीवन रेखाएँ

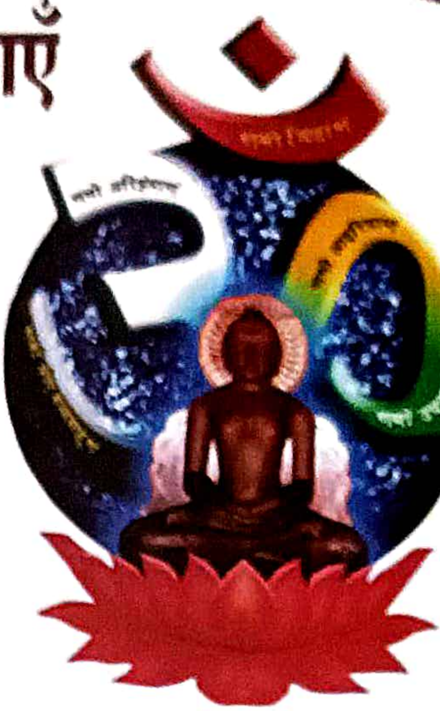

1. शुभ नाम : वीर, अतिवीर, सन्मति वर्द्धमान, महावीर।
2. जाति : क्षत्रिय
3. गोत्र : काश्यप
4. दैहिक दीप्ति : तप्त स्वर्णतुल्य
5. वंश : ज्ञातृ वंश
6. चिह्न : सिंह
7. पितृ-नाम : राजा सिद्धार्थ
8. मातृ-नाम : रानी त्रिशला (प्रियकारिणी)
9. गर्भावतरण बेला : अषाढ़ सुदी 6, उत्तरा हस्त नक्षत्र, शुक्रवार, 17 जून 599 ईसा पूर्व
10. जन्म कल्याण बेला : चैत्र सुदी 13, उत्तरा फाल्गुनी नक्षत्र
11. जन्मभूमि : कुण्डपुर, वैशाली (बिहार प्रांत)
12. निर्ग्रन्थ दीक्षा : ज्ञातृ खण्ड वन, उत्तरा हस्त नक्षत्र मगशिर कृष्ण 10, सोमवार, 29 दिसम्बर, 569 ईसा पूर्व
13. दीक्षाकारण : जाति स्मरण
14. तप कल्याणक : शाल वृक्ष के नीचे, वैशाख सुदी 10, उत्तरा हस्त नक्षत्र, रविवार, 26 अप्रैल 557 ईसा पूर्व
15. केवलज्ञान : ऋजुकूला नदी के तट पर
16. प्रधान गणधर : श्री इन्द्रभूति गौतम
17. प्रधान श्रोता : मगध सम्राट राजा श्रेणिक (बिम्बसार)
18. निर्वाण स्थल : मध्यमा पावानगर (बिहार)
19. आयु प्रमाण : 72 वर्ष
20. निर्वाण बेला : शक संवत् 605 वर्ष पूर्व, स्वाति नक्षत्र, भौमवार, 15 अक्टूबर, 527 ईसा पूर्व
21. दीपोत्सव : सुर-असुर और नर-नारियों द्वारा प्रज्वलित दीपों से दीपमालिका का उत्सव मनाया
22. प्रधान आर्यिका : चन्दना (चन्दनबाला)
23. दिव्य-ध्वनि : प्रथम देशना विपुलाचल राजगृह में, श्रावण कृष्णा प्रतिपदा (वीर शासन जयन्ती)।
24. सिद्धान्त : अहिंसा, सत्य, अचौर्य, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह, स्याद्वाद, अनेकान्त, कर्मविज्ञान, अध्यात्म आदि।

तीर्थंकर महावीर कथा

कथावाचक

आचार्य प्रज्ञसागर मुनि

प्रसङ्ग

भगवान महावीर 2550वाँ निर्वाण महोत्सव

प्रकाशक

भगवान महावीर निर्वाण महोत्सव समिति (रजि.)

तीर्थंकर
महावीर कथा

कथावाचक

आचार्य प्रज्ञसागर मुनि

सम्पादन	:	स्वस्तिश्री सुरेन्द्रकीर्ति स्वामी (पीठाधीश विद्यानंद गुरूकुलम्)
लेखिका	:	अरूणा जैन 'भारती' (मॉडल टाउन, नई दिल्ली)
पुण्यार्जक	:	गुरुभक्त परिवार श्री मनोज जैन, श्रीमति रीना जैन सपरिवार (मॉडल टाउन, नई दिल्ली)
संस्करण	:	1100 प्रतियाँ (19 सितम्बर 2023)
पावन प्रसंग	:	भगवान महावीर 2550वाँ निर्वाण महोत्सव
प्रकाशक	:	भगवान महावीर निर्वाण महोत्सव समिति (रजि.)
प्राप्ति स्थान	:	श्री दिगम्बर जैन रत्नत्रय जिनमंदिर, सैक्टर-10, द्वारका, नई दिल्ली मो. 8595972319, 9625184042
मूल्य	:	

मुद्रक : अंकित जैन 'प्रिंस' (पुलक ग्राफिक्स)
शाहदरा, नई दिल्ली–32, मो. 9810900699, 9810900042

Theerthankar Mahaveera Kathakar By : Acharya Pragy Sagar

तीर्थंकर
महावीर कथा

छन्द चौपाई

(1)

जय श्री महावीर जिनराजा ।
पूजें जिनपद निजहित काजा ।।
जोड़ युगल कर पर धर माथा ।
गाते सुर-नरजिन गुण गाथा ।।

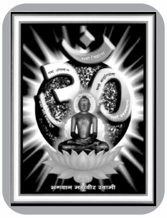

(2)

जिन शासन वर्धमान कहाया ।
आत्मानुशासन भवि मन भाया ।।
अन्तिम तीर्थंकर कहलाए ।
सर्वोदय तीरथ प्रकटाए ।।

(3)

कुण्डग्राम है प्रान्त बिहारा ।
भूप सिद्धारथ सबका प्यारा ।।
त्रिशला महारानी संग सोहें ।
नर - अमरों के मन को मोहें ।।

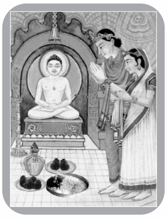

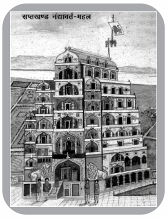

(4)

न्याय नीति से राज्य कराएँ ।
नृपति प्रजावत्सल कहलाएँ ।।
शिशु गर्भागम छह माह ऊनो ।
कोड़ चार दस रत्न प्रमानो ।

(5)

मात महल नित सुर बरसाएँ ।
दीन दुखी भर - भर ले जाएँ ॥
गज शुण्डा सम मोटी धारा ।
देखत ही हो हर्ष अपारा ॥

(6)

इक दिन रानी शयन कराएँ ।
सोलह सपने लख मुस्काएँ ॥
अन्त में मुख में हस्ति समाए ।
मात उदर स्वामी पधराए ॥

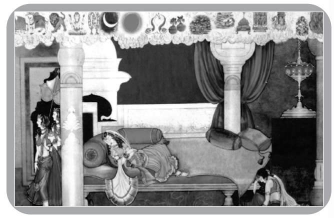

(7)

प्रातः माँ दरबार में जाएँ ।
अर्धासन दे नाथ बिठाएँ ॥
क्रमशः सारे स्वप्न सुनाएँ ।
निमित्त ज्ञान से नृप बतलाएँ ॥

(8)

प्रथम एक गजराज लखाया ।
समझो तीर्थंकर सुत पाया ॥
शब्द वृषभ गम्भीर सुनाया ।
संचालक वृष चक्र बताया ॥

(9)

तीजा सपना सिंह विशाला ।
कर्म शत्रु विनशाने वाला ॥
श्री अभिषेक का फल ये जानो ।
शिशु अभिषेक मेरु पर मानो ॥

(10)

तुमने जो देखी द्वय माला ।
होगा सुत सुरभित तन वाला ।।
छठा चन्द्रमा आवृत्त तारा ।
धर्मामृत भवि सुख विस्तारा ।।

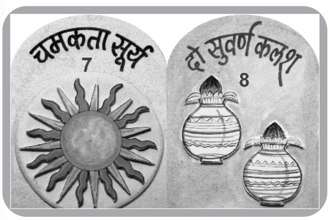

(11)

उदयाचल पर सूर्य निहारा ।
रवि सम मोह तिमिर निर वारा ।।
कनक कलश युग दर्शन पाया ।
निधियों का स्वामी बतलाया ।।

(12)

मीन सहित सरवर को देखा ।
सुखदा लोक प्रकाशक होगा ।।
रज पंकज मय ताल अनोखा ।
लक्षण - व्यंजन शोभित होगा ।।

(13)

गर्जन करता सिन्धु ललामी ।
नव केवल लब्धि का स्वामी ।।
मणिमय सिंहासन बतलावें ।
पुत्र त्रिलोकी नाथ कहावें ।।

(14)

देव विमान से निश्चय जानो ।
स्वर्ग से ही आए सुत मानो ।।
भवन फणीन्द्र भेद भू आवे ।
वसु कर्मों का नाश करावे ।।

(15)

रतन राशि का ढेर बताएँ ।
रतनत्रय निधियों को पाएँ ।।
अगनि ज्वाल निर्धूम बतावें ।
कर्मेन्धन का नाश करावें ।।

(16)

अन्त में मुख में हस्ति समाया ।
अच्युतेन्द्र ही गर्भ में आया ।।
जान स्वप्न फल रोमांचित हों ।
मानो सबसे प्रभु वांछित हों ।।

(17)

सौधर्मेन्द्र भी तभी पधारे ।
चतुर्निकाई सुरगण सारे ।।
सात प्रकार की सेना लाएँ ।
जय - जयकारे नभ गुंजाएँ ।।

(18)

गर्भ शोधना शची कराएँ ।
त्रिभुवन के प्राणी हरषाएँ ।।
मात-पिता सेवा चित्त दीना ।
गर्भ कल्याणक उत्सव कीना ।।

(19)

प्रदक्षिणा नगरी की लगाएँ ।
शिशु गर्भस्थ को नमन कराएँ ।।
छप्पन सुरियाँ करतीं सेवा ।
समाधान की मिलती मेवा ।।

(20)

शत्रु जगत में कौन कहाया ।
राग - रंग में चित्त लगाया ।।
कौन लोक में सच्चा मीता ?
जिसने अपने मन को जीता ।।

(21)

जीवन किसका सफल कहाया ।
रत्नत्रय धन जिसने पाया ।।
प्रामाणिक वच किसके मानें ।
वीतराग - हितु - अर्हत जानें ।।

(22)

शीघ्र कौनसा काम कराएँ ?
कर्म नाश का यतन कराएँ ।।
चिह्न पाप के क्या-क्या होते ?
षट् अनायतन बुद्धि खोते ।।

(23)

क्रमशः गर्भ की वृद्धि होती ।
लेकिन त्रिवली भंग न होती ।।
उदर नहीं बढ़ता है माता ।
पुत्र मात को सब सुख दाता ।।

(24)

शुक्ला चैत्र त्रयोदशि प्यारी ।
जन्मे तीन ज्ञान के धारी ।।
तीन लोक में आनन्द छाया ।
नारकियों ने दुःख भुलाया ।।

(25)

कम्पित सुर आसन हो जावें ।
सौधर्म अवधि ज्ञान लगावें ।।
वीर जन्म समाचार सुनाया ।
सात कदम चल शीश झुकाया ।।

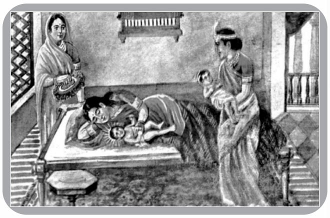

(26)

इन्द्राज्ञा से चली सेनाएँ ।
मानो सागर लहरे आएँ ।।
दुन्दुभि वाद्य ध्वनि जब होती ।
मानो जगत बुलावा देती ।।

(27)

ऐरावत पर इन्द्र-इन्द्राणी ।
सभी क्रियाएँ जग कल्याणी ।।
सौर भवन शची छुप कर जाती ।
माता को निद्रा में सुलाती ।।

(28)

मायामई शिशु पास लिटाया ।
शिशु जिन ले हरि गोद बिठाया ।।
सहस नयन से इन्द्र निहारें ।
फिर भी तनिक संतोष न धारें ।।

(29)

प्रभु को ले ऐरावत राजें ।
मानो उदयाचल रवि साजे ।।
पाण्डुक शिला स्वामि पधराए ।
मंगलमय वसु द्रव्य सजाए ।।

(30)

क्षीरोदधि से कलश भराए ।
सहस हस्त से संग ढुराए ।।
पुष्प समान लगी जल धारा ।
बल अनन्त प्रभु माँहि विचारा ।।

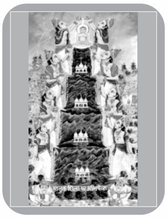

(31)

गंधोदक इतना बरसाया ।
किन्तु न भू पर गिरने पाया ।।
प्रभु तन छू कर वह जल धारा ।
कर्म मैल सब का निर वारा ।।

(32)

उत्तमांग में सभी लगाएँ ।
प्रभु को शत-शत नमन कराएँ ।।
स्वच्छ वस्त्र लेकर इन्द्राणी ।
त्वरित सुखातीं बूँदें पानी ।।

(33)

दिव्य वसन भूषण पहनाए ।
शिशु जिन दीप्ति अनोखी पाए ।।
त्रिभुवन तिलक को तिलक लगाया ।
चूड़ामणि को शीश चढ़ाया ।।

(34)

प्रभु तो वर्ण स्वर्ण सम वाले ।
केवल केश नयन थे काले ।।
शची ने चक्षु में अंजन डाला ।
था स्वरूप मन हरने वाला ।।

(35)

इन्द्र ने प्रभु गुणगान कराया ।
प्रभु तुम मोक्ष मार्ग दर्शाया ।।
मात-पिता का मान बढ़ाया ।
वर्धमान ही नाम धराया ।।

(36)

दाएँ पग अंगुष्ठ लखाया ।
सिंह चिह्न सरनाम कराया ।।
सुर समूह कुण्डलपुर आया ।
शिशु को मां की गोद लिटाया ।।

(37)

मंगलाचरण महल में होते ।
बन्दीजन विरुदावलि गाते ।।
नगरी को भी खूब सजाया ।
मानो स्वर्ग ज़मीं पर आया ।।

(38)

धनपति ने मण्डप रचवाया ।
सुरपति ने नाटक दिखलाया ।।
पूर्व जन्म के दृश्य दिखाए ।
सौधर्म ताण्डव कर हर्षाए ।।

(39)

जन्मोत्सव सब पूर्ण कराए ।
देवलोक को देव सिधाए ।।
चन्द देवियाँ - देव रहाए ।
प्रभु की सेवा में चित्त लाए ।।

(40)

पिता ने भी आनन्द मनाया ।
दोनों हाथ धन खूब लुटाया ।।
माता फूली नहीं समाएँ ।
शिशु मुख पर बलिहारी जाएँ ।।

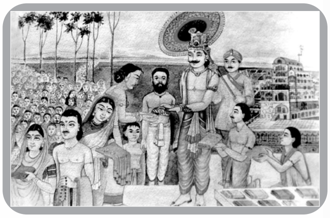

(41)

चन्द्रकला सम प्रभु बढ़ जाएँ ।
सभी कुटुम्बी जन हरषाएँ ।।
वस्त्राभूषण सुरगण लाएँ ।
देवियाँ प्रभु के अंग सजाएँ ।।

(42)

जब कौमार्य अवस्था आई ।
सरस्वती ही मुख में समाई ।।
मति श्रुत अवधि वृद्धि को पाएँ ।
स्वयं व्रतों को ग्रहण कराएँ ।।

(43)

अठरह दोष रहित तन सोहे ।
गुण असीम जन-जन मन मोहे ।।
संहनन वज्र वृषभ नाराचा ।
संस्थान समचतुरस्र साँचा ।।

(44)

दिव्य देह सब रोग विहीना ।
ज्यों भवि गुण धर्मों में लीना ।।
हुआ क्षयोपशम चारित मोहा ।
अब तो निज गुण पर मन मोहा ।।

(45)

इक दिन स्वर्ग में चर्चा होवे ।
वर्धमान सम कोई ना होवे ।।
धीर-वीर-अतुलित बलधारी ।
दिव्य रूप सबके हितकारी ।।

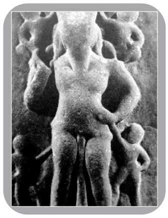

(46)

संगम देव वहाँ पर आया ।
काला सर्प का रूप बनाया ।।
बच्चे तो सब डर कर भागे ।
निर्भय वीर गए थे आगे ।।

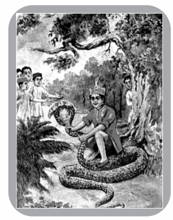

(47)

सर्प के फण पर नृत्य कराया ।
देव बड़े अचरज में आया ।।
'वीर' नाम दे कर हरषाया ।
अपना दोष क्षमा करवाया ।।

(48)

इक दिन मित्रों के संग जाएँ ।
वन विहार को गमन कराएँ ।।
दो मुनि चारण ऋधिधर आए ।
उनके मन का संशय जाए ।।

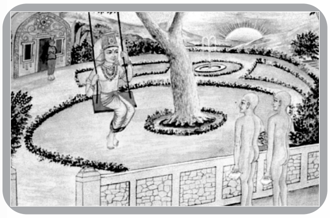

(49)

'सन्मति' नाम दिया हरषाए ।
भक्ति भाव से प्रभु गुण गाए ।।
मन वच तन बल के थे धारी ।
थे समर्थ सब संकट हारी ।।

(50)

इक दिन हस्ति हुआ मतवाला ।
प्रजा को कष्ट दिलाने वाला ।।
हाहाकार मचा था भारी ।
'महावीर' ने पीर निवारी ।।

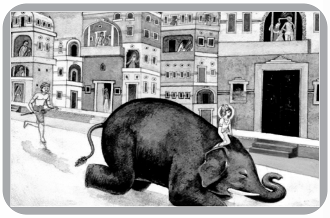

(51)

जिन दर्शन से समता धारी ।
मानों प्राप्त हुई निधि न्यारी ।।
अभयदान परजा ने पाया ।
'महावीर' कह शीश नवाया ।।

(52)

वर्धमान हैं करुणाशाली ।
कथा प्रभू की गरिमावाली ।।
युवा अवस्था को अब पाया ।
मानो कामदेव ही आया ।।

(53)

पाँच काम शर तन में छोड़े ।
सहज भाव से प्रभु ने तोड़े ।।
तीन लोक का काम विजेता ।
छुपा वहीं जहाँ वीर न त्राता ।।

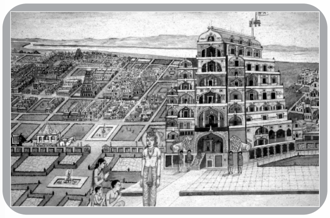

(54)

राग भाव नहिं प्रभु मन जागा ।
इसीलिए वह डर कर भागा ।।
है अचिन्त्य महिमा महावीरा ।
नाम जपें नहिं काम की पीरा ।।

(55)

वन-शमशान में ध्यान लगाएँ ।
निज में निज का रमण कराएँ ।।
माता पुत्र की शादी चाहें ।
पुत्र चले पाने शिव राहें ।।

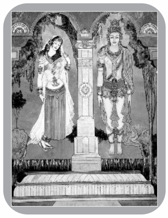

(56)

समय अल्प मुझको तो जाना ।
जिन शासन का तीर्थ चलाना ।।
नारी को सम्मान दिलाना ।
पशुओं के भी प्राण बचाना ।।

(57)

धर्म नाम पर होने वाला ।
हिंसा कर्म मिटाऊँ काला ।।
खड़्ग विराग युगल कर धारूँ ।
मोह रूपी शत्रु को मारूँ ।।

(58)

तीन ज्ञान पा समय गवाया ।
अब तो तन भी लगा पराया ।।
सुन कर माँ की आँखे रोईं ।
पिता ने भी उम्मीदें खोईं ।।

(59)

जब तक चरित प्रकट नहीं मानो ।
श्रद्धा-ज्ञान भी निष्फल जानो ।।
जिसने सम्यक् चारित धारा ।
ऐक्य तीन से हो निस्तारा ।।

(60)

शरण जिनागम-गुरुवर जाएँ ।
देव-शास्त्र-गुरु के गुण गाएँ ॥
बारह भावना मन में भाएँ ।
मन-इन्द्रियों को विजित कराएँ ॥

(61)

सत्य धर्म का आश्रय पाएँ ।
स्वातम में ही दृढ़ता लाएँ ॥
यों शुभ चिन्तन से हो साता ।
नहीं जगत में चित्त भटकाता ॥

(62)

जो भवि अंधकूप गिर जाते ।
निष्फल उनके नयन कहाते ॥
दुर्लभ तन मानव भव पाया ।
भेद ज्ञान का बीज उपाया ॥

(63)

प्रभु ने निर्मल भाव कराए ।
पल में सब वैभव ठुकराए ॥
कारागार महल को माना ।
अक्षय सुख वैराग्य को माना ॥

(64)

सुर आठों लौकान्तिक आएँ ।
उत्सव तप कल्याण मनाएँ ॥
अनुमोदन करते थे वीरा ।
जाओ स्वामी भवदधि तीरा ॥

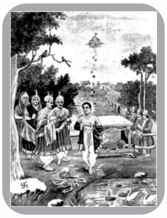

(65)

जीवन निज एकान्त बनाया ।
अनेकान्त को ग्रहण कराया ॥
चन्द्रप्रभा शिविका पर वीरा ।
पधराए हरने भव पीरा ॥

(66)

ज्ञातृखण्ड वन लक्ष्य बनाया ।
नर अमरों ने पक्ष सुनाया ॥
प्रथम पालकी कौन उठाए ।
प्रभु वाणी ही मान्य कहाए ॥

(67)

जो भी मम समान बन जावे ।
मेरी पालकी वही उठावे ॥
संयम धार सकें नहिं देवा ।
इसीलिए कर पाए ना सेवा ॥

(68)

मनुजों ने हर्षोदधि पाया ।
देवों में दुख सिंधु समाया ॥
भूपति सात कदम तक जाएँ ।
फिर विद्याधर अवसर पाएँ ॥

(69)

सुरगण गगन मार्ग से जाएँ ।
शिविका को वन में पहुँचाएँ ॥
शिला पे स्वास्तिक शची बनाएँ ।
पुण्यों का भण्डार भराएँ ॥

(70)

दशमी थी मँगसिर की कारी ।
नमः सिद्ध कह दीक्षा धारी ।।
पंचमुष्ठि कच लौंच कराएँ ।
महाव्रत गज पर पधराएँ ।।

(71)

दिव्य द्रव्य दिवि से ले आएँ ।
पूजा प्रभु की सभी कराएँ ।।
कोई सुन्दर स्तुति गाते ।
कोई जिनगुण अतुल बताते ।।

(72)

मैं तो मन्दमती हूँ स्वामी ।
कृपा करो अब अन्तरयामी ।।
बुद्धि भी जड़रूप है मेरी ।
कैसे अटल भक्ति हो तेरी ।।

(73)

जब रवि मेघ मुक्त हो जाएँ ।
तब ही सहसरश्मि बिखराएँ ।।
यों प्रभु राग-द्वेष विघटाएँ ।
निर्मल ज्ञान ज्योति प्रकटाएँ ।।

(74)

इन्द्र करें जैसे थुति उरसों ।
हम ध्याएँ मन वच तन तुमको ।।
हे जग नाथ! शक्ति हम पाएँ ।
शीश सदा तुमको ही नवाएँ ।।

(75)

गए चतुर्निकाई सुरदेवा ।
एकाकी तपते जिनदेवा ॥
तप तपते थे निश्चल काया ।
ज्ञान तभी मन पर्यय पाया ॥

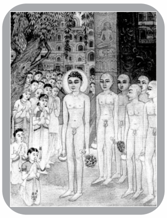

(76)

यों भाव शुद्धि बढ़ती जाती ।
चरणों में ऋद्धियाँ आ जाती ॥
नाना तप प्रभु करते जाते
षट्मासिक तप भी ले पाते ॥

(77)

चर्या को अभिग्रह स्वीकारें ।
नहिं लक्ष्य कोई मन में धारें ॥
इक दिवस कूल नगरी जाएँ ।
वहाँ नृपति तत्क्षण पड़गाहें ॥

(78)

तीन प्रदक्षिणा कर हर्षाए ।
अष्टांग नमन कर सुख उर पाए ॥
मन वच काय से शुद्धि बोलें ।
प्रासुक जल से युग पद धोलें ॥

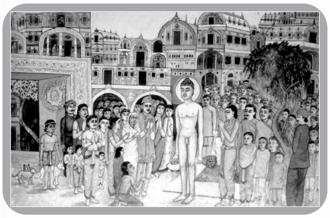

(79)

वह पावन जल सिर पर धारा ।
उच्चासन दे करें जयकारा ॥
फिर अष्ट द्रव्य पूजा कीनी ।
नवधा भक्ति उर धर लीनी ॥

(80)

अब मुद्रा तज अंजुली धारो ।
शुद्धाहार गुरुवर स्वीकारो ।।
हुए नाथ निर्विघ्न आहारा ।
बढ़े भूप के पुण्य भण्डारा ।।

(81)

पंचाश्चर्य देव कराएँ ।
वाद्य दुन्दुभि मधुर बजाएँ ।
रत्न - पुष्प वृष्टि बरसाएँ ।
नभ में जय - जयकार गुंजाएँ ।।

(82)

धन्य दान-दाता गुण गाएँ ।
दाता का सम्मान कराएँ ।।
जो दें तीर्थंकर आहारा ।
वो लहें पुण्य अपरम्पारा ।।

(83)

कोई उसी भव मुक्त कहाएँ ।
तीजे भव कोई निज पद पाएँ ।।
चर्या कर पुनि वन में सिधाएँ ।
दीर्घकाल तक देह तपाएँ ।।

(84)

विचरण निर्भय नित्य कराएँ ।
इक दिन उज्जैनी में आएँ ।।
अतिमुक्तक शमशान पधारें ।
प्रतिमा योग यहाँ पर धारें ।।

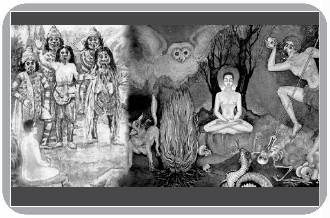

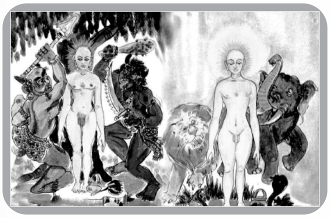

(85)

तभी रुद्र स्थाणु आया ।
धैर्य परीक्षा को ललचाया ।।
स्वामी पर उपसर्ग कराए ।
प्रभु जी तन को नहीं डिगाए ।।

(86)

लज्जित होकर के पछताया ।
निज अपराध क्षमा करवाया ।।
'अतिवीर' कह कर हरषाया ।
फिर उसका कहीं पता न पाया ।।

(87)

प्रभु कौशाम्बी में पधराए ।
पुण्योदय चंदना के आए ।।
सुता बना निज गृह में लाए ।
श्रेष्ठी वृषभसेन कहलाए ।।

(88)

संशय उपजा मन सेठानी ।
देती थी बस कोदों-पानी ।।
साँकल जकड़ी केश विहीना ।
मृण्मय पात्र कठिन था जीना ।।

(89)

चर्या को जब वीर पधारे ।
सुरगण अतिशय करते सारे ।।
स्वर्णिम मृण्मय पात्र कराए ।
कोदों की शुचि खीर बनाए ।।

(90)

केश सुसज्जित चन्दन बाला ।
मिटा बेड़ियों का जंजाला ।।
आगे आकर प्रभु पड़गाहे ।
सबने उसके भाग्य सराहे ।।

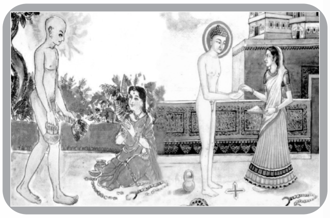

(91)

विधि अनुसार हुए आहारा ।
देवों का था अतिशय सारा ।।
वृषभसेन नयनों में पानी ।
क्षमा माँगती थी सेठानी ।।

(92)

चतुर्मास द्वादश यों बीते ।
घाति कर्म चउ नाथ ने जीते ।।
शुक्ल ध्यान में मन को लगाया ।
प्रतिमा योग अटल कहलाया ।।

(93)

चढ़े क्षपक श्रेणी जिनराया ।
गुणस्थान तेरह को पाया ।।
दशमी सुदि-वैशाख को वीरा ।
मेटें भव-भव की भव पीरा ।।

(94)

परमौदारिक तन संयोगा ।
सप्तधात का हुआ वियोगा ।।
पंच सहस धनु प्रभु पधराए ।
केवलज्ञानी नाथ कहाए ।।

(95)

वह ज्ञान दिवाकर प्रकटाया ।
भविजन कमलों को विकसाया ।।
समवशरण सुर शिल्पी रचाएँ ।
द्वादश सभा वहाँ बनवाएँ ।।

(96)

सभी जीव अस्पृष्ट ही बैठें ।
जिन धुनि सुन मन संशय मेटें ।।
सर्प-नेवला संग संग खेले ।
धुल जाएँ सबके मन मैले ।।

(97)

जगमगाई भामण्डल आभा ।
फीकी हो गई रवि शशि शोभा ।।
तरु अशोक पीछे लहराए ।
चौंसठ चामर अमर ढुराए ।।

(98)

तीन छत्र जिन शीश पे राजें ।
प्रभु सिंहासन अधर विराजें ।।
द्वार जहाँ थे शोभित चारों ।
परकोटे थे नवम् निहारो ।।

(99)

स्फटिक का अन्तिम परकोटा ।
पद्मराग मणि की थी शोभा ।।
बीस सहस थी चहुँदिशि सीढ़ी ।
सीधी थी नहीं टेढ़ी-मेढ़ी ।।

(100)

मानथंभ थे स्वर्णिम चारों ।
मानभंग मानी कर डारो ॥
चतुर्दिशि यक्षेन्द्र थे ठाड़े ।
धर्मचक्र सब शीश पे धारे ॥

(101)

निश्चय जिन मुख एक बताया ।
लेकिन चतुरानन दिखलाया ॥
सब विद्या के ईश कहाते ।
प्रभु पद पदवी अधर धराते ॥

(102)

कवलाहार नहिं नाथ कराते ।
केश नख वृद्धि नहिं पाते ॥
नयन नहीं टिमकार करावे ।
नहिं उपसर्ग कोई कर पावे ॥

(103)

चउ शत योजन सुभिक्ष रहावे ।
चहुँ दिशि में दुख शोक न पावे ॥
जिन तन की छाया नहिं होती ।
गंगा दया कर्म मल धोती ॥

(104)

सुरकृत अतिशय चौदह जानो ।
अर्ध मागधी जिन धुनि मानो ॥
सुरभित जल की वृष्टि कराते ।
षट्ऋतु के फल-फूल सुहाते ॥

(105)

सुर जिन पदतल कमल रचावें ।
स्वर्णिम द्वय शत पच्चिस पावें ।।
चार अंगुल पर अधर रहावें ।
गगन विहारी नाथ कहावें ।।

(106)

दश दिशि नभ निर्मल हो जाता ।
भूतल दर्पण सम चमकाता ।।
पवन कुमार जाति के देवा ।
भू कंटक चुन करें जिन सेवा ।।

(107)

अष्ट सुमंगल द्रव्य धराते ।
कटनी प्रथम पे देव सजाते ।।
धर्म चक्र यक्षेन्द्र चलाते ।
सबसे आगे लेकर जाते ।।

(108)

चलती मन्द सुगंध समीरा ।
ग्रीष्म रितु की हरती पीरा ।।
सब जीवों से मैत्री जानो ।
जय-जय ध्वनि अंबर में मानो ।।

(109)

सुर सुरतरु के पुष्प झराते ।
सब जिन चरणों आश्रय पाते ।।
जिय पनसंज्ञी सभा में आते ।
शुभ भावों से शीश झुकाते ।।

(110)

सुरपति जिन गुण स्तुति गावें ।
गद्‌गद् स्वर से भाग्य जगावें ।।
हे नाथ! अतुल बल प्रकटाया ।
दर्शन-सुख-ज्ञान नंत पाया ।।

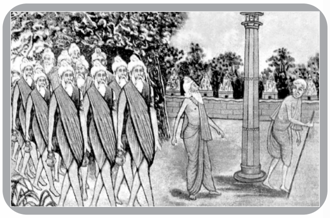

(111)

जिनगुण वैभव को दरशाया ।
जिनधुनि शिवमारग दिखलाया।।
हम भी मानुष भव पा जाएँ ।
स्वातम में ही बस रम जाएँ ।।

(112)

भव्य जीव नित सभा में आते ।
लेकिन आशा खो कर जाते ।।
छ्यासठ दिन धुनि नहिं सुन पाएँ ।
अवधि ज्ञान सौधर्म लगाएँ ।।

(113)

गणधर बिन नहिं खिरती वाणी ।
गणधर हों गौतम अभिमानी ।।
एक वृद्ध का वेश बनाया ।
डोले डगमग जीरण काया ।।

(114)

गौतम द्विज के पास में जाके ।
बोले उससे वचन सुनाके ।।
षट् द्रव्य त्रय काल बताए ।
षट् लेश्या षट् काय कहाए ।।

(115)

पंच समिति गति ज्ञान चरित्रा ।
अस्तिकाय पन व्रतहि पवित्रा ।।
नवपद आदि मुझे समझाओ ।
गुरुवर मेरा भरम मिटाओ ।।

(116)

द्रव्यादिक मैने नहिं जाना ।
लेश्यादिक का नहीं ठिकाना ।।
इसको मैं कब तक रोकूँगा ।
उत्तर तव गुरु सन्मुख दूँगा ।।

(117)

चले इन्द्र संग गौतम ज्ञानी ।
मानथंभ लख पानी-पानी ।।
समवशरण गए भागे-भागे ।
धर्म चक्र था आगे-आगे ।।

(118)

वीर चरण में अवनत होते ।
गद्‌गद् स्वर में बोले रोते ।।
हाय! मैं कैसे निज को भूला ।
अज्ञानी था फिर भी फूला ।।

(119)

बाह्याडम्बर सब तज दीना ।
स्वयं हो गए वस्त्र विहीना ।।
केश लौंच कर दीक्षा लीनी ।
मनः पयर्य की सिद्धि नवीनी ।।

(120)

खिरने लगी प्रभु की वाणी ।
व्याकुल जीवों को सुखदानी ।।
राग द्वेष से जीव बंधाएँ ।
करमों से पुद्गल को पाएँ ।।

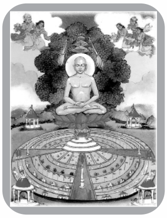

(121)

राग रहित होकर ही पाते ।
अपना अवागमन मिटाते ।।
हैं पुरुषार्थ पुरुष के चारों ।
धर्म-काम-धन-मोक्ष विचारो ।।

(122)

सबसे पहला धर्म कहाया ।
शेष तीन का हेतु बताया ।।
धर्म सहित हों किरिया सारी ।
धर्म से ही आसक्ति निवारी ।।

(123)

निश्चय जीव न मरे जिलाए ।
बदले पुद्गल की परयाए ।।
द्रव्य-पर्याय भेद जिन जाना ।
समकित-ज्ञान-चरित-शिवथाना ।।

(124)

धर्म मूल है प्राणी सेवा ।
धर्म सार्वकालिक है मेवा ।।
गुण प्रधान जिन धर्म कहाया ।
गुण प्रकटाना लक्ष्य बनाया ।।

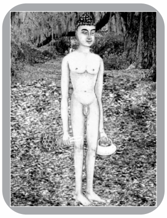

(125)

कर्म भूमि में कर्म कराओ ।
आलस और प्रमाद भगाओ ।।
फल की चिन्ता मन नहिं लाओ ।
'दान्या सो भोग्या' फल पाओ ।।

(126)

पुण्य पाप दोनों को छोड़ो ।
धर्म से ही जीवन को जोड़ो ।।
कारण कीचड़ का जल जानो ।
जल से ही हो स्वच्छ प्रमानो ।।

(127)

दुराचरण भी मन स्वीकारे ।
निर्मल मन ही पार उतारे ।।
जल को यदि हम गर्म कराएँ ।
निमित्त हटे शीतल जल पाएँ ।।

(128)

गर्म नीर भी अगनि पे डाला ।
तो भी झट बुझ जाए ज्वाला ।।
आत्म हेत पुरुषार्थ कराएँ ।
आत्म तत्व में घुल मिल जाएँ ।।

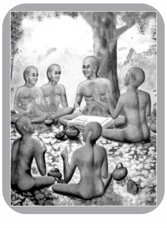

(129)

सर्वोदय तीरथ प्रकटाया ।
पुण्योदय भविजन का आया ।।
घन गर्जन सम खिरती वाणी ।
निज भाषा में समझें प्राणी ।।

(130)

ओंकारमयी वह जिनवाणी ।
हो जीव मात्र की कल्याणी ।।
होती अष्टादश महाभाषा ।
हों सातशतक लघु जिन भाषा ।।

(131)

बीज पदों में व्याप्त अपारा ।
गणधर जी करते विस्तारा ।।
गूंथा द्वादशांग श्रुत सारा ।
श्रुत सागर कोई करे न पारा ।।

(132)

पुण्य प्रबल जिन अपरम्पारा ।
होता प्रभु का वहीं विहारा ।।
राजगृही इक नगरी प्यारी ।
मगध देश में थी विस्तारी ।।

(133)

मुनिसुव्रत जिन जन्म महाना ।
राजगृही नगरी में जाना ।।
श्रेणिक भूप यहीं का राजा ।
संग महिषी सुरतरु सा साजा ।।

(134)

न्याय नीति से राज्य कराते ।
वीर दिव्यध्वनि यहीं खिराते ।।
साठ हजार प्रश्न थे पूछे ।
आज भी सबको शिवमग सूझे ।।

(135)

एक दिवस शुभ सूचना लाया ।
वनरक्षक दरबार में आया ॥
षट् ऋतु के फल फूल अपारा ।
करे समर्पित नृप सुखकारा ॥

(136)

कर पर सिर धर कर बतलाया ।
प्रभु का समवशरण पधराया ॥
विपुलाचल की शोभा न्यारी ।
दर्शन को जाते नर-नारी ॥

(137)

पुण्य प्रताप आप का भारी ।
दर्शन कर लो जग उपकारी ॥
शेर-गाय सब ही वहाँ जीते ।
एक घाट पर पानी पीते ॥

(138)

भव-भव के वैरी संग खेले ।
मानो वन में मैत्री फैले ॥
सुने वचन माली हितकारी ।
वस्त्राभूषण भेंटें भारी ॥

(139)

सप्तपद सिंहासन तज जाएँ ।
तीर्थंकर को नमन कराएँ ॥
नगरी में बजवाई भेरी ।
जिनदर्शन की हो तैयारी ॥

(140)

समवशरण श्रेणिक पधराए ।
प्रजाजनों को साथ में लाए ।।
की अष्टांग वन्दना स्वामी ।
नर प्रकोष्ठ तिष्ठे अभिरामी ।।

(141)

दिव्य ध्वनि खिरती मनहारी ।
श्रेणिक वचन कहें उपकारी ।।
मेरे पूरव भव बतलाओ ।
सारे संशय दूर कराओ ।।

(142)

तत्क्षण खिरी प्रभु की वाणी ।
सुर-नर-पशुओं को सुखदानी ।।
मुनिव्रत-श्रावक धर्म सुनाया ।
मन से मोह तिमिर विघटाया ।।

(143)

जो भी साधु धर्म अपनाएँ ।
साक्षात् वे भव तिर जाएँ ।।
जो अक्षम श्रावक व्रत पालें ।
वे भी आवागमन को टालें ।।

(144)

सुनो भूप! आर्य खण्ड महाना ।
विंध्याचल था कूट सुहाना ।।
खदिरसार था नाम तुम्हारा ।
मुनि से लिया नियम सुखकारा ।।

(145)

काग माँस का त्याग कराया ।
सच्चे मन से नियम निभाया ।।
अन्त समय हुआ रोग निदाना ।
काग माँस ही औषधि माना ।।

(146)

तुमने मृत्यु ही स्वीकारी ।
औषधि से नहिं व्याधि निवारी ।।
भंग नहीं उसने व्रत कीना ।
मर कर स्वर्ग देव पद लीना ।।

(147)

दो सागर सुख स्वर्ग बिताए ।
श्रेणिक नृप बनकर यहाँ आए ।।
सुन महिमा व्रत की सुखदाता ।
व्रत धारें सब हो मन साता ।।

(148)

फिर भी श्रेणिक अरज कराएँ ।
अब क्यों नहीं व्रत मन को भाएँ ।।
गौतम गणधर ने समझाया ।
नरकायु तुम बंध कराया ।।

(149)

अब क्षायिक समकित को पाया ।
बंध तीर्थंकर प्रकृति कराया ।।
सप्तम नरकायु घट जाए ।
प्रथम नरक की शेष रहाए ।।

(150)

श्रेणिक जब भी प्रश्न कराते ।
गौतम वाणी रहस्य बताते ॥
सहस साठ नृप प्रश्न कराएँ ।
उत्तर गणधर जी से पाएँ ॥

(151)

श्रेणिक मनुज प्रमुख थे श्रोता ।
शास्त्रों से ही ज्ञान ये होता ॥
विपुलाचल पर सात हि बारी ।
समवशरण आया सुखकारी ॥

(152)

निकट भव्य थे श्रेणिक राजा ।
योग मिला प्रभु का हित काजा ॥
देश-विदेश में विचरण होता ।
उद्‌भव सम्यग्दर्शन होता ॥

(153)

परम अहिंसा धर्म सिखाया ।
जीव मात्र उद्‌धार कराया ॥
स्याद्‌वाद की महिमा गाई ।
अनेकान्त कहते जिनराई ॥

(154)

स्याद्‌वाद सिद्धांत बताता ।
धर्मों का मतभेद मिटाता ॥
हुए शुद्ध आचार विचारा ।
हुआ समन्वय जिन धुनि द्वारा ॥

(155)

स्वावलम्ब का पाठ पढ़ाया ।
दीन वृत्ति अपराध बताया ।।
साम्यभाव कर्तव्य सिखाया ।
अनासक्त ही श्रेष्ठ कहाया ।।

(156)

संघ प्रमुख गणधर थे ग्यारा ।
श्रमणोत्तम गौतम निरधारा ।।
छत्तिस सहस आर्यिका जानो ।
सर्वप्रथम सति चन्दना मानो ।।

(157)

सहस चतुर्दश मुनिवर ज्ञानी ।
एक लाख श्रावक सम्मानी ।।
शत इन्द्रों से पूजित स्वामी ।
असंख्यात सुर-नर-पशु-प्राणी ।।

(158)

सर्वश्रेष्ठ श्रावक संघ नेता ।
राजा श्रेणिक कर्म विजेता ।।
त्रयलक्ष श्राविका संघ नायिका ।
रानी चेलना जिन गुण गायिका ।।

(159)

भक्ति भाव वश मेंढक आया ।
कमल पँखुरी मुख में लाया ।।
श्रेणिक गज के पगतल आया ।
मरकर स्वर्ग में सुर पद पाया ।।

(160)

नारी पीड़ा को पहचाना ।
मौन वेदना को भी जाना ।।
अत्याचार जो उस पर होते ।
स्वाभिमान को उसके खोते ।।

(161)

इसीलिए अधिकार दिलाया ।
हैं स्वतंत्र सब जीव बताया ।।
हम जैसे ही प्राणी सारे ।
सब ही दस प्राणों को धारे ।।

(162)

दीन दलित उद्धार कराया ।
पशु हत्या को बंद कराया ।।
'जियो-जीने दो' नाद गुंजाया ।
पावन प्रभु सन्देश सुनाया ।।

(163)

भोगों की दलदल से निकाला ।
नारी का सम्मान सँभाला ।।
धर्म सत्य प्रतिरूप बताया ।
सत्य सनातन है समझाया ।।

(164)

कथनी - करनी एक कराओ ।
सम्यक् पंथ तभी अपनाओ ।।
आवश्यक धन संचय पाओ ।
शेष सभी का त्याग कराओ ।।

(165)

यही अपरिग्रह वाद कहाया ।
पर द्रव्यों से राग छुड़ाया ।।
'ही' से 'भी' की ओर बढ़ाया ।
दुराग्रह प्रतिकार कराया ।।

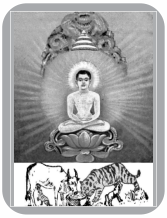

(166)

जन भाषा में जग संबोधा ।
लोक क्रांति के बने पुरोधा ।।
जन मानस को ज्ञान दिलाया ।
आत्म धर्म को श्रेष्ठ बताया ।।

(167)

मिथ्या तम को दिया नशाई ।
केवलज्ञान ज्योति प्रकटाई ।।
तीस वर्ष तक किया विहारा ।
आए पावापुर के तीरा ।।

(168)

समवशरण जब था विघटाया ।
त्रयोदशी को ध्यान लगाया ।।
शुक्ल ध्यान का खड़ग चलाया ।
कर्म अघाती नाश कराया ।।

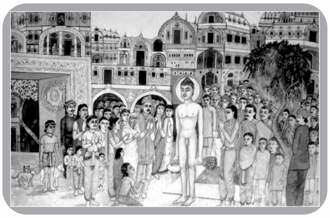

(169)

ऊर्ध्व गमन ह्रस्वकाल में जानो ।
शाश्वत सुख से युक्त प्रमानो ।।
कार्तिक कृष्ण अमावस प्यारी ।
हुए अनन्त गुणों के धारी ।।

(170)

मोक्ष महल के स्वामि कहाए ।
शिवरमणी अधिपति बतलाए ।।
अष्टम वसुधा को प्रभु पाएँ ।
आतम सुख को प्राप्त कराएँ ।।

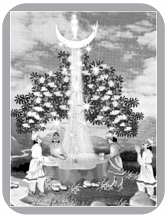

(171)

तन परमाणू सब बिखराए ।
केश अरु नख ही शेष बचाए ।।
सुरगण चतुर्निकाई आवें ।
उत्सव प्रभु निर्वाण मनावें ।।

(172)

माया तन निर्माण कराया ।
रत्न पालकी में रखवाया ।।
नृत्य गीत भक्ति रंग छाया ।
सब ने अपना शीष झुकाया ।।

(173)

अगनि कुमार देवगण आएँ ।
मुकुटों से ज्वाला प्रकटाएँ ।।
दिव्य अगनि से देह जलाएँ ।
तन सुगन्ध से जग महकाएँ ।।

(174)

चिता भस्म को शीश चढ़ाया ।
उत्तमांग प्रीती से लगाया ।।
प्रभु वियोग का अवसर आया ।
तो भी स्वयं नियोग कराया ।।

(175)

प्रातः प्रभु निर्वाण मनाया ।
सन्ध्या गौतम ज्ञान लहाया ।।
स्वाध्याय परमं तप जानें ।
अन्तःकरण पवित्र प्रमानें ।।

(176)

सब कर्मों का नाश कराए ।
गुण रत्नाकर वीर कहाए ।।
शूराग्रणी सुभट बतलाए ।
अविनाशी शाश्वत सुख पाए ।।

(177)

जो हैं स्वर्ग मोक्ष अभिलाषी ।
वे हों स्वाध्याय अभ्यासी ।।
तेरह विध चारित्र को पालें ।
पाँचों पाप सर्वथा टालें ।।

(178)

पाँचों इन्द्रियाँ विजित कराएँ ।
पंच समितियों को अपनाएँ ।।
तीन गुप्ति हित यतन हो पूरा ।
पाल सकें चारित यह शूरा ।।

(179)

यह व्यवहार चरित कहलाता ।
जीवों को है मोक्ष प्रदाता ।।
जो श्रद्धान है आत्म स्वरूपी ।
वह निश्चय सम्यकत्व अनूपी ।।

(180)

जो प्रभु अन्तर - स्वानुभूती ।
वो है निश्चय ज्ञान विभूती ।।
अपरिमेय बल प्रभु जी पाएँ ।
हम भी अपने गुण प्रकटाएँ ।।

(181)

हम व्यवहार रतनत्रय साधें ।
फिर निश्चय चारित आराधें ।।
प्रभु ने ये दो मार्ग बताए ।
मुनि श्रावक व्रत धर्म सिखाए ।।

(182)

मुनिव्रत है मानो असिधारा ।
ग्यारह प्रतिमा श्रावक द्वारा ।।
अणुव्रत पन त्रय गुणव्रतधारी ।
शिक्षाव्रत है चार प्रकारी ।।

(183)

बारह व्रत मनवच तन पालें ।
कृत-कारित से हिंसा टालें ।।
अनुमोदन नहिं पाप करावें ।
तब ये व्रत निर्दोष कहावें ।।

(184)

चौबिस विधि परिग्रह को त्यागें ।
संयम - संवर - तप अनुरागें ।।
पर द्रव्यों में प्रीति न लावें ।
स्वयं बचें औरों को बचावें ।।

(185)

रत्नत्रय निधि जब पा जावें ।
अपनी बुद्धि को विकसावें ।।
स्वयं स्वयं में रमण करावें ।
स्वयं स्वयंभू पद को पावें ।।

(लघुता)

प्रज्ञ सिंधु आचार्य का, 'अरुणा' पर उपकार ।
सदुपयोग हुआ समय का, हो संवर सुखकार ।।
महिमा सन्मति वीर की, मेरा शिथिलाचार ।
त्रुटियाँ शोध सुधारिए, हो आतम उद्धार ।।

।। इत्यलम् ।।

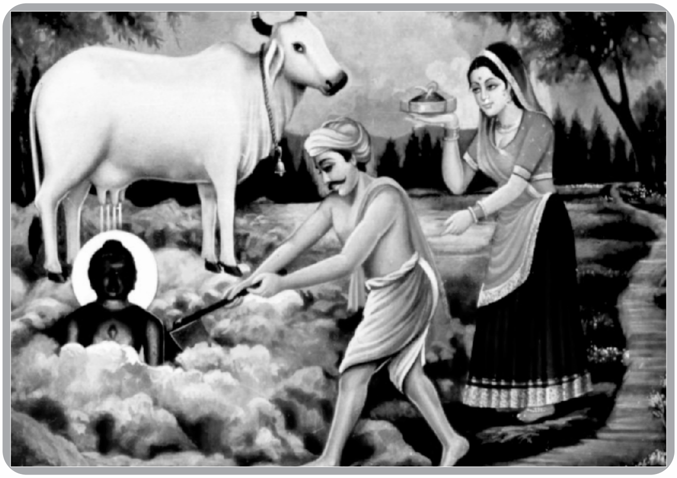

श्री महावीर देशना

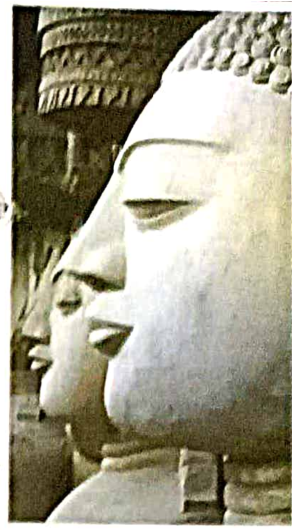

- जीव रक्खणं धम्मो — जीव की रक्षा करना धर्म है
- अहिंसा परमो धम्मो — अहिंसा परम धर्म है।
- अप्पदीवो भव — स्वयं प्रकाशित हो ।
- चारित्तं खलु धम्मो — चारित्र ही धर्म है।
- दंसण-मूलो धम्मो — सम्यग्दर्शन धर्म का मूल है
- धम्मो अहिंसा लक्खणं — अहिंसा धर्म का लक्षण है।
- विणयो मोक्ख-द्दारं — विनय मोक्ष का द्वार है।
- समओ सव्वत्थ सुंदरो लोगे — आत्मा ही लोक में सर्वत्र सुन्दर है।
- आदा हु मे सरणं — आत्मा ही मेरी शरण है।
- णाणेण पवज्जा — ज्ञान ही प्रव्रज्या (दीक्षा) है।
- अज्झयण-मेव-झाणं — अध्ययन ही ध्यान है।
- णाणेव झाण-सिद्धी,
  झाणेण मोक्ख-सिद्धी — ज्ञान से ध्यान की सिद्धि और ध्यान से मोक्ष की सिद्धि होती है।
- णाणमेव पयासं — ज्ञान ही प्रकाश है।
- वत्थु सहावो धम्मो — वस्तु का स्वभाव धर्म है।
- रयणत्तं च धम्मो — रत्नत्रय धर्म है।
- ण धम्मो धम्मियेण विणा — धर्म बिना धार्मिक नहीं और धार्मिक बिना धर्म नहीं ।
- अण्णण्णोवयारो जीवाणं — परस्पर उपकार करना जीवों का धर्म है।
- णिग्गंथो हि मोक्ख-मग्गो — निर्ग्रन्थता ही मोक्षमार्ग है।
- अज्झयणेण विणा झाणं णत्थि,
  झाणे अज्झयणं णत्थि — अध्ययन बिना ध्यान नहीं, ध्यान में अध्ययन नहीं।
- संसारेण विणा णिव्वाणं णत्थि,
  णिव्वाणे संसारे णत्थि — संसार बिना निर्वाण नहीं, निर्वाण में संसार नहीं।
- ज्ञानात् त्यागः, त्यागात् शान्तिः — ज्ञान से त्याग और त्याग से शान्ति।
- जीओ और जीने दो ।

भगवान महावीर निर्वाण महोत्सव समिति की महत्वपूर्ण उपलब्धियाँ

भगवान महावीर निर्वाण महोत्सव समिति (रजि.)

भगवान महावीर 2550वाँ निर्वाण महोत्सव

उद्घाटन समारोह : रविवार, 26 नवम्बर 2023 प्रातः 10 बजे

स्थान : इन्दिरा गांधी इन्डोर स्टेडियम परिसर, नई दिल्ली

PULAK GRAPHICS (DELHI) 9810900699, 9810900042